Vol 3 Issue 4 Jan 2014

Impact Factor : 1.6772 (UIF)

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Review Of Research
Vol. 3, Issue. 4, Jan. 2014
ISSN:-2249-894X

Available online at www.ror.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

सात आसमान में मुस्लिम समाज की छवि

अनुज कुमार तरूण

तदर्थ सहायक प्रवकता हिन्दी विभाग, शिवाजी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय.

सारांश :

सात आसमान में मुस्लिम समाज का चित्रण है। हिन्दी में बहुत कम ऐसे उपन्यास हैं जो मुस्लिम समाज के आन्तरिक जीवन पर लिखे गये हों। गोपाल राय लिखते हैं – ''अधिकतर उपन्यासकारों ने भारतीय मुसलमानों की जिन्दगी को साम्पदायिक समस्याओं से ही जोडंकर देखा है पर एक सच्चाई उनके अपने निजी जीवन की भी है।'' इस समाज के निजी जीवन की सच्चाई पर लिखे जाने वाले उपन्यासों में गुलशेर खॉं शानी के ' काला जल' राही मसूम राजा के 'आधा गॉंव', 'दिल एक सादा कागज', 'हिम्मत जौनपुरी', बदीउज्जमा के 'छाको की वापसी', 'सभा पर्व', मंजूर एहतेशाम के 'सूखा बरगद' शामिल है। असगर वजाहत के सात आसमान और 'कैसी आगी लगायी' इसी क्षेणी के उपन्यास हैं। 'सात आसमान' मुस्लिम जीवन को एक व्यापक और नए विजन के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास है।

प्रस्तावना :

'सात आसमान' में मुस्लिम जीवन की सैंकडों वर्षों के इतिहास और संस्कृति की पृष्ठभूमि में उसकी समकालीन समस्याओं के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। असगर वजाहत ने इस उपन्यास में मुगल साम्राज्य के पतन के दिनों अस्तित्व में आए नवाब सामन्तों की शानशौकत, फिजूलखर्ची, सनक और दोवानगी की इतिहास–कथा से आरम्थ कर धीरे–धीरे उसके टूटने और परास्त होने की कथा कही है।

'सात आसमान' सैयद इकरामुद्दीन के हुमायूं के साथ हिन्दुस्तान आने से लेकर बीसवीं सदी के अन्तिम दौर में लेखक के स्पेशल कोरस्पोंडेट बनकर यूरोप जाने तक के लगभग चार सौ सालों का लेखा–जोखा है।

हिन्दी उपन्यास का इतिहास – गोपाल राय, पृ. 435–36.

इन चार सौ वर्षो के जरिये लेखक ने मुस्लिम समाज के उन भीतरघातों की तरफ हमारा ध्यान दिलाया है, जिस पर शायद ही किसी की दृष्टि गई हो। सात आसमान का आरंथ सामंती परिवेश के चित्रण से होता है। पर वक्त के थपेड़े सहते–सहते वह टूटने लगता है। डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी लिखते हैं – ''सात आसमान के पूर्वांश में जो अधिकांश है, पूर्वजों के प्रतापी, विलासी, जिद्दी, मूल्य केन्द्रित जीवन का जो विशाल ढॉंचा विस्तार से और निहायत तन्मयता से खड़ा किया गया है, वह ईंट–ईंट करके गिरता है और आखिरकार भड़भड़ा कर धराशायी हो जाता है।''

भारत के सामाजिक–राजनीतिक जीवन में स्वतंत्रता पूर्व और स्वतंत्रता पश्चात् अनेक सामाजिक परिवर्तन हुए। इन परिवर्तनों का भारतीय समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ा। पर अपनी रूढ़िप्रियता और अशिक्षा के कारण मुस्लिम समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ा। पर अपनी रूढ़िप्रियता और अशिक्षा के कारण मुस्लिम समाज इन परिवर्तनों से अछूता ही रहा। इसकी जिम्मेदारी बहुत हद् तक इनकी सामंजी सोच है, प्राचीन गौरव है, जिसे वे छोड़ना नहीं चाहते थे। उपन्यास के जिन पात्रों ने बदलते हुए ऐतिहासिक परिस्थितियों के साथ तारतम्य नहीं बनाया नहीं की। वे स्वयं ही अप्रसांगिक हो गये। क्योंकि नया परिवेश नई मानसिक बनावट की मॉंग करता है। नाना, शहंनशाह आगा, अब्बा मियॉं अप्रसांगिक हो जाते हैं, क्योंकि वे सामंती मूल्यों से चिपके रहे हैं, जबकि सामंती व्यवस्था यथास्थितिवादी व्यवस्था है।

Title: "*सात आसमान में मुस्लिम समाज की छवि* **".Source: Review of Research [2249-894X]** *अनुज कुमार तरूण* **yr:2014 vol:3 iss:4**

स्वतंत्रता पूर्व जब गॉव का आर्थिक ढांचा स्थिर था, तो यह समाज स्वायत्त था। जैसे–जैसे अंग्रेजी शासन से आर्थिक बदलाव आता गया, उस समाज की नींव हिलती गयी। अंग्रेजों के औद्योगिक नीति ने उद्योंगो को नष्ट कर दिया जिससे मुस्लिम घरानों में चल रहे

हंस, सं. राजेन्द्र यादव, अंक फरवरी 1999, लेख – विकास की यातना, विश्वनाथ त्रिपाठी, पृ. 88.

परंपरागत उद्योगों को भारी क्षति हुई। इस क्षतिपूर्ति के लिए उन्होंने दूसरे उभर रहे उद्योगों की तरफ अपना ध्यान लगाया पर नई शिक्षा और सरकारी नौकरी को अभी भी गुलामी के रूप में ही देखते रहे तथा उसकी उपेक्षा करते रहे। आजादी के बाद भी स्थिति में बहुत बड़ा परिवर्तन नहीं आया। भारत–पाकिस्तान के बॅट जाने के कारण भारतीय मुसलमानों में एक ओर जहाँ अविश्वास उभरा वहीं सात आसमान का समाज अपने को सुरक्षित महसूस करता रहा। इसका कारण कोई आर्थिक बदलाव या राजनैतिक जागरूकता नहीं थी, वरन् जमींदारी का अभी भी उनके पास रह जाना था। इस स्थिति को छोड़कर उनके लिए पाकिस्तान जाना असंभव था। लेखक ने लिखा है – ''वैसे अब्बा मियॉ का जो कुछ भी था जमींदारी ही थी, वहीं सैंकड़ों सालों में पुरखों की बची–खुची जायदाद थी। उसी से उनका सम्मान था। उसी से उनका नाम था। उसी से उनकी आमदनी थी।'' पर यह स्थिति ज्यादा दिनों तक कायम नहीं रह सकी। 1960 के दशक में लागू हुए भूमि–सुधार कानून ने इस समाज की अर्थव्यवस्था को तोड़कर रख दिया। जिसके परिणामस्वरूप मुस्लिम समाज को भयंकर राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक संक्रमण की स्थिति का सामना करना पड़ा उपन्यास में लक्खूमियॉ, लेखक और उसका छोटा भाई नई शिक्षा प्रणाली अपनाते हैं और जीविका चलाने के लिए अपने परम्परागत व्यवसाय को छोड़ शहर की ओर प्रवास करते हैं। यह प्रवास केवल लक्खू मियॉ और लेखक का नहीं वरन उस पूरे सामाजिक ढॉचे का है जो इन मूल्यों से छुटकारा पाना चाहते हैं।

ऐसे कितने ही प्रश्न मुस्लिम–समाज की ओर मुॅह बाये खड़े हैं। जिनके उत्तर अभी तलाशे जाने हैं। उपन्यासकार ने उपन्यास को मानवीय जीवन के समानांतर रचने की कोशिश की है। इसके लिखने के पीछे मकसद रहा है कि अपने समय के साथ अपने अनुभवों,अपनी समझ आर सरोकारों का लेखा–जोखा बॉटा जाए। भले ही यह बात लेखक ने 'कैसी आगि लगाई' के सन्दर्भ में कही हो पर 'साम आसमान' में उसका यह मकसद स्पष्ट दिखाई पड़ता है। उपन्यास में मूल्यों की जड़बध्दता, वास्तविकता दुनिया की निर्ममता, क्रूरता, अमानवीयता आदि का चित्रण भी यही संकेत देता है कि यह दुनिया कितनी दोषपूर्ण हो गई है, इसमें बड़े परिवर्तन करने पड़ेंगे। इसे बहुत बदलना पड़ेगा, तब कहीं जाकर यह रहने की जगह बन पायेगी। मुस्लिम समाज को भी परिवर्तन के लिए बड़े धक्के की जरूरत है। इसके लिए उसे किसी बल विशेष की जरूरत नहीं है। जरूरत है तो सामाजिक जागरूकता की जिसे लेखक पूरे उपन्यास में महसूस करता रहा है।

साहित्यकारों ने साम्प्रदायिकता के कारणों को बताने की कोशिश तो की है, परन्तु बहुत से अन्य धार्मिक समूहों की भांति मुसलमान वैज्ञानिक क्षेत्रों मे यूरोपियों की तरह तेजी से विकास क्यों नहीं कर सका, इसके कारणों की चर्चा करने की कोशिश ही नहीं की है।

'सात आसमान' में लेखक ने इन्हीं कारणों की जॉच–पड़ताल करने की कोशिश की है। उसने बताया है कि किस तरह धीरे–धीरे पूरे भारत पर जब अंग्रेजी राज कायम हो गया तो बचा–खुचा उद्योग भो खत्म हो गया। अंग्रेजों ने अपने फायदे के लिए कृषि पर जोर दिया, जिससे एक नयी–व्यवस्था ने जन्म लिया, यह थी जमींदारी व्यवस्था। जिसने भारतीय समाज को रोग की तरह ग्रस लिया। इन संक्रामक कीटाणुओं से आज तक भारतीय समाज पूरी तरह मुक्त नहीं हो सका है और शायद इसका सबसे ज्यादा प्रभाव मुस्लिम समाज पर पड़ा जो अब भी इस व्यवस्था के मो से जकड़ा हुआ है।

मुस्लिम समाज में जमींदारी–व्यवस्था एक नोस्टेल्जिया की तरह है जिससे वह मुक्त नहीं होना चाहता। भारतीय–मुसलमानों के सामाजिक–आर्थिक विकास का अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि उनमें हो रहा विकास अनुसूचित जाति/जनजाति आदि से भी कम है। मुसलमानों मे गरीबी का स्तर अन्य धार्मिक समूहों की अपेक्षाकुत अधिक है। अधिकतर मुस्लिम–युवक बेरोजगार हैं। भारतीय मुसलमान शिक्षा में भी पिछड़े हुए हैं। यही हालात लगभग सभी क्षेत्रों में है। हर जगह संवादहीनता की स्थिती बनी हुई है।

यह स्थिति केवल उनकी विमुखता के कारण नहीं है बल्कि उनके उस नोस्टेल्जिया के कारण जो उन्हें विरासत में मिली है। उसने उनके विचार जगत् को रूढ़ बना दिया है। उनके अन्दर अनेक प्रकार ही अकर्मण्यता को जन्म दे दिया है।

यही कारण है कि भारतीय फलक पर जब मध्यवर्ग का उदय हो रहा था तब या तो मुस्लिम समाज अपने नोस्टेल्जिया में खोया हुआ था। या फिर अपने संकीर्णताओं में फंसा हुआ था। जिसने शिक्षा को मदरसा की झोली में डाल नौकरी को अछूत बना दिया था।

'सात आसमान' इन्हीं संकीर्णताओं से मुक्ति व अपने को नयी परिस्थिती में ढालने की कहानी है। उपन्यास की कहानी शुरूआती दौर में पारंपरिक ढंग से चलती है। मध्यान्तर में जब लक्खू मियॉ खानदान के सबसे पहले ग्रेजुएट बनते हैं तो कथा अपने परंपरागत रूप को छोड़ एक नये परिवेश की ओर बढ़ती है। अंततः लेखक का पलायन और शहर में उसका बसना कथा को चरमोत्कर्श प्रदान करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

– असगर वजाहत : सात आसमान, पहला संस्करण, 1996, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली।
कैसी आगी लगाई, संस्करण, 2004, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

– असगर अली इंजीनियर : भारत में साम्प्रदायिकता इतिहास और अनुभव, दूसरा संस्करण, 2004, इतिहास बोध प्रकाशन।

– एम. एन. श्रीनिवासन, अनु. नेमीचन्द जैन : आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, प्रथम संस्करण हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्विविद्यालय।

– गोपाल राय : हिन्दी उपन्यास का इतिहास, प्रथम संस्करण, 2005, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

– पूरन चन्द्र जोशी : परिवर्तन और विकास के सांस्कृतिक आयाम, प्रथम संस्करण, 1987 राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

– बच्चन सिंह : हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, संस्करण, 2006, राधाकृश्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।

– रामस्वरूप चतुर्वेदी : हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, सोलहवां संस्करण, 2002

– संपादित – बिविनचन्द्र, मृदुला मुखर्जी : आजादी के बाद का भारत (1947–2000), आदित्य मुखर्जी संस्करण, 2002, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।

– डॉ. श्यामसुन्दर घोष : भारतीय मध्यवर्ग, तृतीय संस्करण, 1982, बिहार ग्रंथ अकादमी।

– हंस, जनवरी–फरवरी, जून, 1999, सं. राजेन्द्र यादव।

– प्रतियोगिता दर्पण।

– राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण, रिपोर्ट नं. 468.

– अबूसलेह शरीफ, इंडियन ह्यूमेन डेवलपमेंट रिपोर्ट, 1999, ऑक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस, दिल्ली।

– जनसत्ता।

– हिन्दुस्तान।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

* International Scientific Journal Consortium Scientific
* OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net